बच्चों के लिए

कीड़ों की पहेलियाँ

डॉ० शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी

दो शब्द

अल्लाह तआला ने इस दुनिया में अनगिनत चीज़ें पैदा की हैं। उन्हें जीने का तरीक़ा बताया है और उनके लिए ज़िन्दगी के सामान भी फ़राहम किए हैं। इन प्राणियों में पशु भी हैं, चार पैर से चलनेवाले भी, दो पैर से चलनेवाले भी, रेंगनेवाले भी और हवा में उड़नेवाले भी। ये वैसे ही अल्लाह के प्राणी हैं जैसे अल्लाह की सर्वश्रेष्ठ रचना, यानी इनसान! अल्लाह तआला फ़रमाता है—

> ''ज़मीन पर चलनेवाले जितने भी जानदार हैं या हवा में अपने परों से उड़नेवाले जितने प्रकार के पक्षी हैं, उनमें कोई क़िस्म ऐसी नहीं जो तुम्हारी तरह के गरोह न हों।'' (क़ुरआन, सूरा-6 अनआम, आयत-38)

कीड़े-मकोड़े भी अल्लाह के पैदा किए हुए अजीबो-ग़रीब प्राणी हैं, उनकी बनावट, काम करने के उनके तरीक़े और ख़ूबियों पर ग़ौर किया जाए तो अपने-आप ही अल्लाह की बड़ाई और अज़मत के अलफ़ाज़ ज़बान पर जारी हो जाते हैं। क़ुरआन में बहुत-से प्राणियों, पशु-पक्षी और कीड़ों-मकोड़ों का ज़िक्र आया है और उनसे इबरत और नसीहत के बहुत से पहलुओं की तरफ़ इनसानों को ध्यान दिलाया गया है।

डॉ॰ शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी बच्चों के जाने-माने साहित्यकार और अदीब हैं। उन्होंने साइंसी मालूमात को आसान ज़बान में बच्चों तक पहुँचाने के मक़सद से कई किताबें लिखी हैं। 'हशराते-क़ुरआनी' के नाम से एक किताब मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से उर्दू में छप चुकी है जिसमें उन्होंने उन कीड़ों के बारे में दिलचस्प जानकारियाँ पेश की हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन में आया है। इस किताब में उन्होंने चींटी, रेशम के कीड़े और टिड्डी के बारे में जीवन के क्रिया-कलाप की मालूमात कहानी की शक्ल में बच्चों के सामने पेश की। हैं। ये मालूमात कहानी में कुछ इस तरह से बयान की गई हैं कि बच्चे शौक़ से इन्हें पढ़ेंगे और ग़ैर-महसूस तौर पर

उनकी साइंसी जानकारी में इज़ाफ़ा होगा। इस किताब की एक और ख़ूबी यह भी है कि इसे पढ़कर बच्चों में क़ुरआन को समझकर पढ़ने का शौक़ भी पैदा होगा।

दुआ है कि अल्लाह तआला शम्सुल-इस्लाम साहब की यह ख़िदमत क़बूल करे, उसका फ़ायदा आम करे और उन्हें इसी तरह के दूसरे काम करने की तौफ़ीक़ दे! (आमीन!)

—मुहम्मद रज़ीउल-इस्लाम नदवी
सेक्रेट्री तस्नीफ़ी अकेडमी
जमाअत-ए-इस्लामी हिन्द
नई-दिल्ली

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
'अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।'

कीड़ों की पहेलियाँ

गर्मियों की छुट्टियाँ हुईं तो सब लोगों ने श्रीनगर जाने का प्रोग्राम बना लिया। ऐमन और अमीन तो न जाने कब से वहाँ जाने के लिए बेताब थे। श्रीनगर में उनके बड़े पापा शारिक़ रहते थे, जिनकी बेटी थी शिफ़ा, जो ऐमन से चन्द साल बड़ी थी। वह ऐमन और अमीन की पक्की दोस्त थी। शिफ़ा तो कई बार दिल्ली आ चुकी थी, मगर ऐमन सिर्फ़ एक ही बार श्रीनगर गई थी और वह भी उस वक़्त जब वह मुश्किल से एक साल की थी। उसकी मम्माँ कहती थीं कि उसने पहले-पहल वहीं चलना शुरू किया था। अमीन ऐमन का चचाज़ाद भाई था। बहुत ही शरीर लेकिन बेहद ज़हीन और बातूनी। वह श्रीनगर तो नहीं गया था, मगर अल्लाह ने उसे एक तस्वीर बनानेवाला दिमाग़ दिया था। इसलिए वह वहाँ की ऐसी तस्वीर खींचता था जैसे सब कुछ उसका देखा-भाला हो। अपने दादा अब्बू की बताई हुई बातें उसके दिमाग़ में ज्यों-की-त्यों तस्वीर की तरह महफ़ूज़ हो जाती थीं। वह अक्सर ऐमन से कहता—

"ऐमन! तुम्हें मालूम है, बड़े पापा का घर बहुत बड़ा है। ऊपर के कमरों से चारों तरफ़ के पहाड़ नज़र आते हैं जिनकी चोटियों पर सफ़ेद-सफ़ेद बर्फ़ जमी रहती है। उनके घर में चेरी और ख़ूबानी के पेड़ भी हैं। ख़ूबानी से लदी शाख़ें तो ऊपर के कमरे में खिड़कियों से अन्दर तक आ जाती हैं, जब चाहो ख़ूबानियाँ तोड़ो और खाओ।"

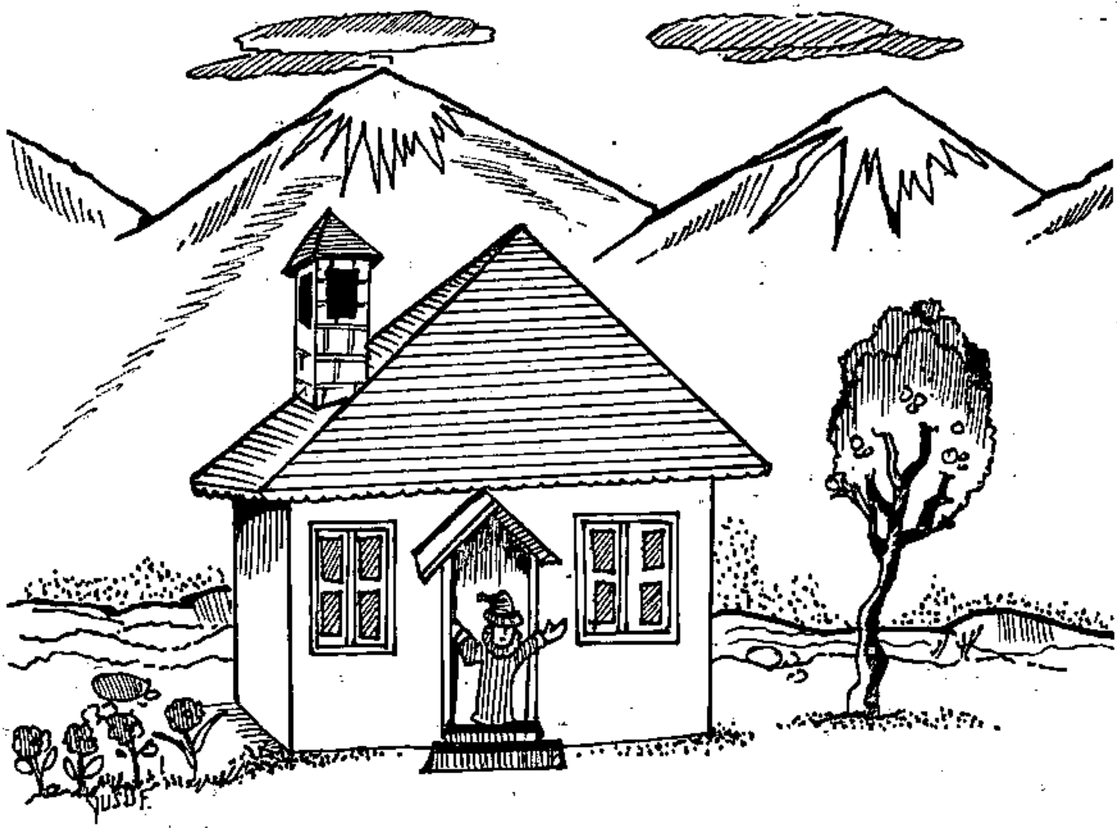
ऐमन भी उसकी इस तस्वीरकशी का ख़ूब-ख़ूब मज़ा लेती और इस तरह श्रीनगर जाने की उनकी चाहत कुछ और बढ़ जाती।

अमीन के अब्बा हारिस, दादा अब्बू के सबसे छोटे बेटे थे और ऐमन के पापा ख़ालिद उनसे बड़े, जबकि शारिक़ सबसे बड़े बेटे थे। हारिस और ख़ालिद ने दफ़्तर

से छुट्टी ले ली थी। दादा अब्बू को तो छुट्टी लेने की ज़रूरत ही न थी, क्योंकि वह तो कई साल पहले ही अपनी मुलाज़िमत से रिटायर हो चुके थे। जल्द ही यह क़ाफ़िला हवाई जहाज़ से श्रीनगर रवाना हो गया। ऐमन और अमीन के लिए हवाई जहाज़ का यह पहला सफ़र था। उन्हें डर लग रहा था। वे सोच रहे थे कि जहाज़ के ऊपर उठते वक़्त वे कहीं इधर-उधर लुढ़क न जाएँ। दादा अब्बू ने समझाया कि डरने की कोई बात नहीं है। जहाज़ के पाइलट बहुत तजरिबेकार और तरबियत-याफ़्ता होते हैं। वे जानते हैं कि जहाज़ को हवा में किस तरह कंट्रोल किया जाता है। और भई, हिफ़ाज़त करनेवाला तो अल्लाह है। हमें उसपर पूरा भरोसा करना चाहिए। वह इंशा-अल्लाह ज़रूर हमें हिफ़ाज़त से हमारी मंज़िल तक पहुँचाएगा। दादा अब्बू ने ऐमन और अमीन को सफ़र की दुआ* भी सिखाई और बताया कि यह दुआ हर सफ़र के शुरू में ज़रूर पढ़नी चाहिए, वह सफ़र चाहे हवाई जहाज़ से हो या किसी दूसरी सवारी से। दुआ पढ़ने के बाद बच्चों की बेचैनी सचमुच बहुत कम हो गई।

ये लोग बारह बजे के क़रीब श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उतर गए। शारिक़, शिफ़ा और शिफ़ा की अम्मी रअ्ना इन लोगों को लेने आए थे। सब एक-दूसरे से मिलकर बहुत ख़ुश हुए। शिफ़ा, ऐमन और अमीन की ख़ुशी का तो ठिकाना ही न था। वे ख़ुश थे कि अब सब मिलकर ख़ूब दिल भरकर खेलेंगे, घूमेंगे और ढेरों बातें करेंगे। दिल्ली में बारह बजे दोपहर में तो ख़ासी गर्मी हो जाती थी, मगर श्रीनगर का मौसम तो बेहद सुहाना और ख़ुशगवार था। जिधर नज़र डालो हसीन ऊँचे-ऊँचे दरख़्त खड़े थे। हर तरफ़ बेहद हरियाली थी और फूल तो इतने कि इन बच्चों ने कभी देखे ही न थे। श्रीनगर में हर तरफ़ गुलाब तो यूँ खिल रहे थे जैसे दूसरी जगहों पर बोगनविलिया खिलते हैं। ये लोग रास्ते के दोनों तरफ़ मकानों की दीवारों पर गुलाबों से लदी बेलें देखते हुए आए। वे सोच रहे थे, जब श्रीनगर की सड़कें और घर इतने ख़ूबसूरत हैं तो यहाँ की वे जगहें कितनी ख़ूबसूरत होंगी जिन्हें देखने दुनिया भर के सैयाह (पर्यटक) यहाँ आते हैं।

* क्या ही बड़ाईवाला है वह जिसने इसे हमारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया वरना हम तो ऐसे न थे कि इसे क़ाबू में कर सकते और बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटनेवाले हैं। (क़ुरआन, सूरा-43 ज़ुख़रुफ़, आयतें-13,14)



बड़े पापा का घर सचमुच वैसा ही था जैसा नक़्शा अमीन ने खींचा था। चेरी और ख़ूबानी के पेड़ भी थे और ख़ूबानी से लदी शाख़ें उसी तरह कमरों की खिड़कियों से अन्दर आ रही थीं, अलबत्ता फ़र्क़ यह था कि ख़ूबानियों को पकने में अभी कुछ देर थी।

बड़े पापा ने श्रीनगर घूमने का पक्का इन्तिज़ाम कर रखा था।

सब लोग सुबह-सवेरे घर से निकल जाते और शाम को वापस लौटते। उन्होंने दिल भरकर श्रीनगर की सैर की। शालीमार बाग़, निशात बाग़, बोटैनिकल गार्डेन, चश्मा-ए-शाही, परी महल, बादाम वाड़ी, ग़रज़ हर जगह इतनी ख़ूबसूरत थी कि वहाँ बार-बार जाने को दिल चाहता था, और डल झील का तो कहना ही क्या! चारों तरफ़ ख़ूबसूरत पहाड़, झील इतनी बड़ी कि जहाँ तक नज़र जाए पानी-ही-पानी नज़र आए। इसमें क़तार से खड़े ख़ूबसूरत डिज़ाइनों के बोट हाऊसेज़ (Boat Houses)

और झील में आते-जाते शिकारे। सबने शिकारों में बैठकर घन्टों डल झील के हसीन नज़ारों का भरपूर मज़ा लिया। गुलमर्ग श्रीनगर से चालीस मील दूर था, मगर इतना ख़ूबसूरत कि वहाँ पहुँचकर यही लगता था गोया जन्नत में आ गए हों।

वहाँ का कंडोला प्रोजेक्ट तो लाजवाब है। ट्रालियाँ तारों पर चलती हैं और लोगों को पहाड़ों की ऊँचाइयों तक ले जाती हैं। ऊपर पहुँचकर सब लोगों ने दिल भरकर बर्फ़ का नज़ारा किया।

एक हफ़्ता यूँ ही गुज़र गया। अभी पहलगाम की जन्नत देखना बाक़ी था। एक दिन जब सब लोग निकलने का इरादा कर ही रहे थे कि बादल घिर आए और फिर बूँदा-बाँदी शुरू हो गई, इसके साथ ही ठंडी हवाएँ भी चलने लगीं। शाम होते-होते सर्दी अच्छी ख़ासी बढ़ गई, ऐसे मौसम में बाहर निकलने का तो सवाल ही न था। सब लोग घर में बन्द होकर रह गए। रात तक सर्दी इतनी बढ़ गई कि आग जलानी पड़ी। सब लोग उसके चारों तरफ़ बैठ गए। खाना भी उसी के आस-पास बैठकर खाया गया और फिर उसके बाद वहीं महफ़िल जम गई। इस घर के लोगों में एक बात बहुत अच्छी है। जब भी कोई ऐसा मौक़ा आता है घर के सब छोटे-बड़े मिलकर हिस्सा लेते हैं और ख़ूब मज़े लेते हैं। उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। हारिस ने सुझाव दिया—

"चलो भई, क्यों न आज कैम्प फ़ायर हो जाए।"

"मगर कैसे? बाहर तो हम जा नहीं सकते और फिर आग कहाँ जलाई जाएगी?" शिफ़ा ने सवाल किया।

"मैं बताता हूँ", हारिस ने समझाया। "कमरे में जलती हुई इस बुख़ारी को आग समझ लो और इस कमरे के फ़र्श को मैदान। रअना भाभी सबको क़हवा पिलाएँगी और सब लोग अपनी-अपनी पसन्द की चीज़ें पेश करेंगे, बस हो जाएगा कैम्प फ़ायर।"

सुझाव अच्छा था, सबने पसन्द किया। ज़रा ही देर में क़हवे की प्यालियाँ आ गईं और सब लोग अपने-अपने कमाल दिखाने के लिए तैयार हो गए। सबसे पहले ख़ुद

हारिस ने अपने स्कूल के दिनों की मोनो-एक्टिंग पेश की और फिर मौलाना शिब्ली की मशहूर नज़्म 'अदले-जहाँगीरी' ख़ूब मज़े ले-लेकर सुनाई, जिसे सबने बहुत पसन्द किया। शिफ़ा, ऐमन और अमीन ने भी बहुत प्यारी-प्यारी नज़्में सुनाईं। अमीन की अम्मी इरम ने सबको ख़ूब लतीफ़े सुनाए। शिफ़ा की अम्मा रअना ने ग़ालिब की बहुत ख़ूबसूरत ग़ज़ल सुरीली आवाज़ में सुनाई। ऐमन की अम्मा शगुफ़्ता ने मुल्ला नसरुद्दीन के मशहूर क़िस्से मज़े ले-लेकर सुनाए। बाक़ी लोग ज़रा संजीदा (गम्भीर) क़िस्म के थे जिन्हें मालूमाती बातें करना ज़्यादा अच्छा लगता था। अमीन की दादी अम्मी तो ज़्यादातर ख़ामोश ही रहती थीं, उन्हें दूसरों को सुनने में ही मज़ा आता था। मगर जब सब लोगों ने बहुत कहा तो उन्होंने उर्दू के शायर इक़बाल का एक प्यारा-सा शेअर सुनाया—

"हरकते-मुस्तक़िल में है राज़े-हयाते-कायनात
जिसको सुकूँ नसीब हो वह कोई ज़िन्दगी नहीं।"

(इस कायनात का राज़ लगातार चलते रहने में है। आराम पानेवाले की कोई ज़िन्दगी नहीं होती।)

इसे सुनकर ऐमन के दादा अब्बू बोले—

"भई वाह! कितना अच्छा और काम का शेअर है, लेकिन शर्त यह है कि लोग इसे अपनी ज़िन्दगी में अपनाने की कोशिश करें। चलो अब कुछ पहेलियाँ हो जाएँ। पहेलियाँ वही लोग पूछें जो अभी तक ख़ामोश थे। सबने कहा कि पहल ख़ालिद की तरफ़ से हो। वह बोले—

"चलें भई, मैं आप सबसे एक कीड़े की पहेली पूछता हूँ। बताएँ वह कौन-सा कीड़ा है जिसके बारे में कहा जाता है—

"नन्हीं ने भी भरी उड़ान, जान गँवा बैठी अनजान!"

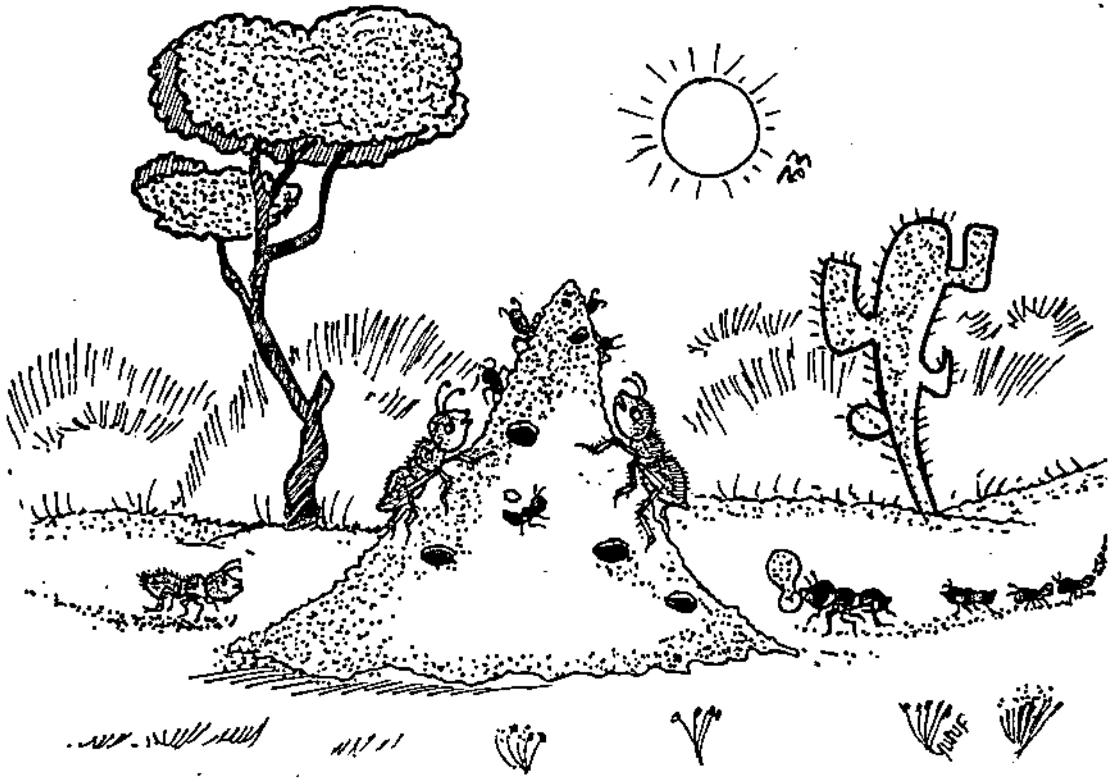
पहेली सचमुच नई थी और अक़्ल के इस्तेमाल की दावत दे रही थी। ऐमन के दादा अब्बू मुस्कराए और ख़ालिद की तरफ़ तारीफ़ी नज़रों से देखा। सब लोगों ने

सोचना शुरू किया और ख़ालिद से कुछ अता-पता बताने के लिए कहा। ख़ालिद ने अता-पता बताते हुए कहा—

"देखिए भई, यह एक बहुत ही ख़ास कीड़ा है। इतना ख़ास कि इसका ज़िक्र क़ुरआन में भी आया है, बल्कि क़ुरआन की एक पूरी सूरा ही इस कीड़े पर है।"

यह सुनकर बच्चे तो एक-दूसरे का मुँह तकने लगे क्योंकि उन्होंने क़ुरआन पढ़ा ज़रूर था मगर अभी तर्जमे से नहीं पढ़ पाए थे। मगर बड़े जल्दी ही पहेली की तह तक पहुँच गए। इससे पहले कि कोई बोले ऐमन के दादा अब्बू जो शायद पहले ही पहेली का हल जान चुके थे, बोले—

"भई, इतने अते-पते के बाद यह पहेली बड़ों के लिए तो पहेली रही ही नहीं, इसलिए मेरे ख़याल में अब इसे सिर्फ़ बच्चा पार्टी ही को बूझने दिया जाए। मगर अब उन्हें कुछ दूसरा अता-पता बताना होगा। जहाँ तक क़ुरआन में ज़िक्र होने की बात



है तो बाद में कोई भी इसके बारे में उन्हें बता देगा।"

ख़ालिद ने शिफ़ा, ऐमन और अमीन की तरफ़ देखते हुए कहा–

"देखो यह एक छोटा-सा मुन्ना-सा कीड़ा है जो हर जगह बहुत आसानी से नज़र आ जाता है। धुन का इतना पक्का है कि इसकी मिसाल दी जाती है। वह हर वक़्त काम में लगा रहता है, न थकता है और न ही हार मानता है, मगर जब इस बेचारे को मौत आती है तो इसके पर निकल आते हैं।"

इतना सुनना था कि तीनों बच्चे एक ज़बान होकर चिल्लाए, "चींटी" यह सुनकर ख़ालिद के अब्बू बोले–

"ख़ालिद, तुमने इस बार भी अता-पता पहले ही की तरह बहुत ज़्यादा बता दिया, इसलिए जैसे बड़ों ने इसे आसानी से समझ लिया, वैसे ही बच्चों ने भी, इस पहेली को एकदम से बूझ लिया। मरने से पहले चींटी के पर निकलने की बात तो मुहावरे में बोली जाती है जिसे हर कोई जानता है।"

जब यह पहेली बूझी जा चुकी तो ऐमन के दादा अब्बू ने अपने बड़े बेटे शारिक़ से कहा–

"हाँ बेटे, अब ज़रा तुम इन बच्चों को बताओ कि चींटी का ज़िक्र क़ुरआन में कहाँ आया है?" शारिक़ ने शिफ़ा, ऐमन और अमीन से बात करते हुए कहा–

"देखो, अरबी ज़बान में चींटी को नम्ल कहते हैं और क़ुरआन के उन्नीसवीं पारे में सत्ताईस नम्बर की सूरा का नाम ही 'सूरा अन-नम्ल' है। इस सूरा की आयत-18, 19* में अल्लाह ने अपने एक रसूल हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) का ज़िक्र किया है।

* यहाँ तक कि जब यह सब चीटियों की वादी में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा–"ऐ चींटियो! अपने बिलों में घुस जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलेमान (अलैहि॰) और उनके लश्कर तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो।" सुलेमान (अलैहि॰) उसकी बात पर मुसकुराते हुए हँस पड़े और बोले–"ऐ मेरे रब! मुझे क़ाबू में रख कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करता रहूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किया है और ऐसा नेक अमल करूँ जो तुझे पसन्द आए और अपनी रहमत से मुझको अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर।" (क़ुरआन, सूरा-27 नमल, आयतें-18,19)

हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) जब अपने लश्कर के साथ चींटियों की वादी में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, "चलो सब जल्दी से अपने-अपने बिलों में चली जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान (अलैहि॰) और उनका लश्कर तुम्हें कुचल दे।" सुलैमान (अलैहि॰) ने जब चींटी की बात सुनी तो मुस्कराए और उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया–

यह सुनकर अमीन बोला, "भला सुलैमान (अलैहि॰) ने एक छोटी-सी चींटी की बात किस तरह सुन ली और समझ भी ली। क्या चींटियाँ भी बातें करती हैं?"

शारिक़ ने बच्चों को समझाया–

"हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) को तो अल्लाह ने सब जानवरों की बोलियाँ सिखाई थीं, इसलिए कहा जा सकता है कि अगर चींटी ने एक बात कही तो हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने उसे ज़रूर सुना और समझा होगा। वैसे कीड़ों के बारे में रिसर्च करनेवाले बताते हैं कि चींटियाँ अलग-अलग मौक़ों पर अपने बदन से ख़ास तरह की बू (गंध) छोड़ती हैं और उससे अपनी साथियों को पैग़ाम देती हैं। पैग़ाम समझकर दूसरी चींटियाँ काम करती हैं। जैसे अगर ख़तरे की ख़बर देनी हो, या अपने साथियों को यह बताना हो कि किसी जगह पर बहुत-सी खाने की चीज़ें मौजूद हैं, या किसी दुश्मन से मुक़ाबला के लिए अपने साथियों को बुलाना हो, या फिर किसी महफ़ूज़ जगह पर अपना घर बदलना हो, इन सब बातों की ख़बर बू (गंध) से ही दी जाती है। हमें तो ये बातें इतनी तरक़्क़ी करने के बाद आज मालूम हुई हैं, लेकिन हमें यह यक़ीन करना चाहिए कि अल्लाह तआला अपने रसूलों को जब चाहे कोई भी सलाहियत दे सकता है। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने इसी सलाहियत के मिलने पर अल्लाह का शुक्र अदा किया था।"

ख़ालिद के बाद अब चूँकि शारिक़ की बारी थी। इसलिए उन्होंने कहा–

"लगता है आज सिर्फ़ कीड़ों ही की पहेलियाँ पूछी जाएँगी। मेरी पहेली भी एक कीड़े ही के बारे में है और मेरे बाद अब्बू भी ज़रूर किसी कीड़े की पहेली पूछेंगे। अब्बू तो कीड़ों के माहिर हैं, और अपनी सारी ज़िन्दगी ही कीड़ों पर रिसर्च करने में

लगाई है। चलें, अभी तो आप लोग मेरी पहेली बूझने की कोशिश करें। बताएँ, वह कौन-सा कीड़ा है जिसकी ख़ूबियाँ हैं—

"पत्तों का टिफ़न—रेशम का कफ़न।"

"शारिक़ भाई, कुछ अता-पता भी बताएँगे?" इरम ने पूछा।

"बहुत कुछ अता-पता तो पहेली के अन्दर ही मौजूद है। यह कीड़ा पत्तों पर गुज़ारा करता है और इसके बदन पर रेशम का कफ़न होता है। बड़ों के लिए एक पता यह है कि इस कीड़े का ज़िक्र तो क़ुरआन में नहीं है, मगर उससे बनी ख़ास चीज़ का ज़िक्र क़ुरआन में जगह-जगह मौजूद है।"

ऐमन के दादा अब्बू तो इस बार भी पहले की तरह मुस्कुराए जा रहे थे, शायद उनके लिए यह पहेली भी बहुत आसान थी। मगर दूसरे लोग सोच में डूबे हुए थे। थोड़ी देर बाद शिफ़ा ने कहा—

"अब्बू, आपकी पहेली का जवाब क्या तितली का लारवा है?"

"नहीं, तुम्हारा जवाब सही नहीं है। मगर बताओ कि तुमने यह सोचा कैसे?"

"बात बहुत साफ़ है। तितली का लारवा पत्ते खाता है, वह उसका टिफ़न हुआ और उसकी खाल क्योंकि रेशम की तरह मुलायम होती है, इसलिए शायद उसे रेशम का कफ़न कह दिया होगा।"

"तुम्हारी सोच बहुत हद तक सही है, मगर खाल को लिबास कहना ज़्यादा ठीक होता। पहेली में तो उसे कफ़न कहा गया है। तुम ठीक सोच रही हो, अभी थोड़ा और सोचो। तुम इंशा-अल्लाह ठीक जवाब बता पाओगी।"

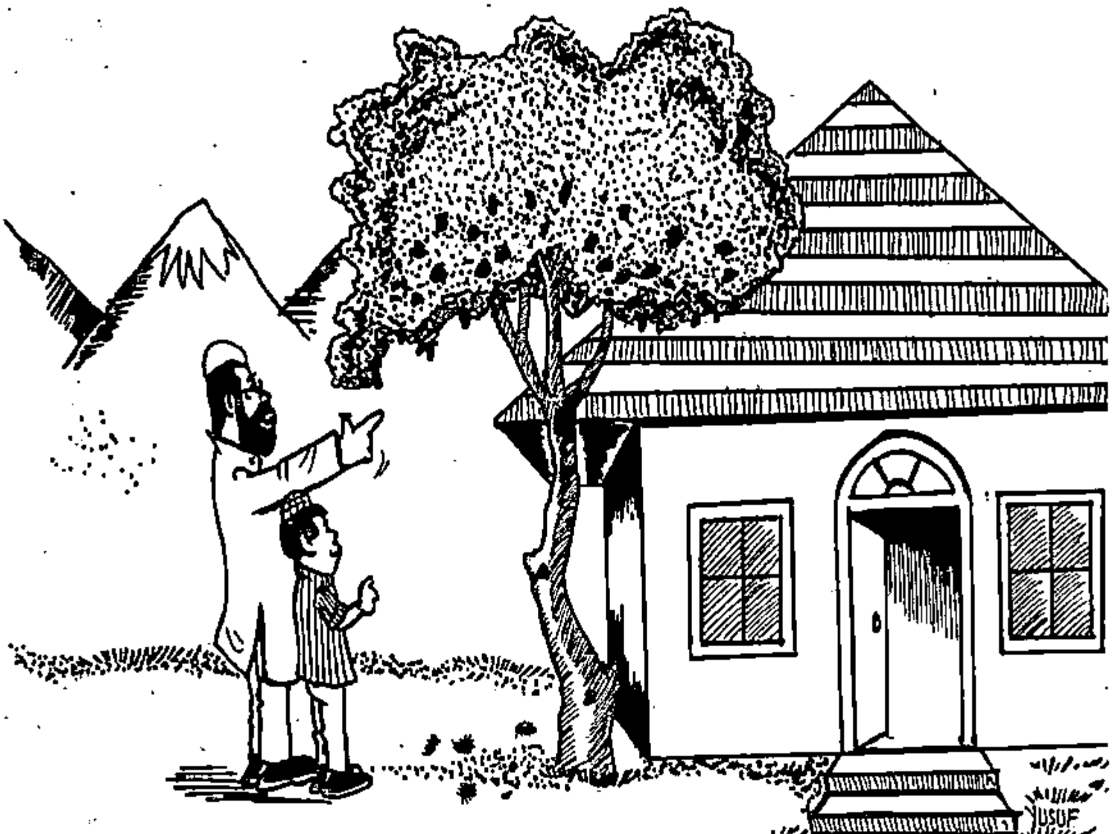
ऐमन बहुत सोचकर बोली, "तो बड़े पापा! क्या फिर वह बालोंवाला लारवा है, जिससे बाद में परवाना बन जाता है और हाँ, वह अपना ख़ोल भी तो उतारकर फेंक देता है। क्या हम उसके ख़ोल को उसका कफ़न नहीं कह सकते?"

शारिक़ तारीफ़ किए बिना न रह सके, ऐमन ने बहुत अच्छी दलील दी थी। वे बोले—

"ऐमन अगर पहेली बनानेवाले ने तुमसे मशवरा किया होता तो इसका जवाब यही होता। मगर अफ़सोस कि पहेली का जवाब कुछ और ही है।"

इरम बहुत देर से ख़ामोश थी और पहेली के बारे में सोच रही थी, वह बोलीं–

"शारिक़ भाई, आप एक सवाल का जवाब दे दीजिए कि इस कीड़े का सिर्फ़ कफ़न रेशम जैसा होता है या फिर उसके कफ़न से रेशम बनता है?"



इससे पहले कि शारिक़ कुछ कहें उनके अब्बू ने इरम की तारीफ़ करते हुए कहा–

"बेटी तुम्हारे सवाल का जवाब देने का मतलब यह होगा कि तुम्हें पहेली का ही जवाब बता दिया जाए।"

यह सुनने के बाद पहेली सब ही के लिए आसान हो गई थी। मगर फिर भी एक आख़िरी सवाल शिफ़ा की अम्मा रअना ने पूछ ही लिया—

"अच्छा शारिक़ यह तो बता ही दें कि क्या इस कीड़े का टिफ़न शहतूत के पत्ते हैं?"

शारिक़ ने सिर हिलाकर हाँ कहा तो सब लोग एक साथ चिल्लाए, "रेशम का कीड़ा।"

पहेली बूझने के बाद सब बड़ों के लिए यह समझना तो बिलकुल-ही मुश्किल न था कि कीड़े से पैदा होनेवाले रेशम का ज़िक्र तो क़ुरआन में जगह-जगह मौजूद है, क्योंकि नेक लोगों को जन्नत में रेशम का लिबास पहनाया जाएगा*।"

अब आख़िरी बारी शारिक़ के अब्बू की थी। जब सब लोग ख़ामोश होकर उनकी तरफ़ देखने लगे तब वह बोले—

"जैसा कि शारिक़ ने कहा था, मेरी पहेली भी एक कीड़े ही के बारे में है। पहेली में कीड़े की बहुत-सी ख़ूबियाँ बताई गई हैं। तुम्हें समझकर कीड़ों को तलाश करना है, इसलिए पहेली को ग़ौर से सुनो और बताओ कि वह कौन-सा कीड़ा है?"

घोड़े जैसा मुँह है उसका, मूँछें जैसे हिरन के सींग
आँखें हैं हीरे की कनियाँ, पंख हैं उसके चील समान
टाँगें ऊँट से मिलती-जुलती, गर्दन बैल के जैसी है
सीना बिलकुल बिच्छू जैसा, दुम है उसकी साँप समान।

पहेली सचमुच बहुत टेढ़ी थी। सब लोग एक-दूसरे की तरफ़ देखने लगे। यह देखकर शारिक़ की अम्मी ने कहा—

---

*"नेक लोग हरीर (रेशम) और दीबाज के लिबास पहने आमने-सामने बैठे होंगे।"

(क़ुरआन, सूरा-44 दुख़ान, आयत-52)

"जन्नती लोग फ़र्शों पर ऐसे तकिए लगाकर बैठेंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे।"

(क़ुरआन, सूरा-55 रहमान, आयत-54)

"अरे क्यों इन बच्चों को बेवकूफ़ बना रहे हो। क्या इतना टेढ़ा-मेढ़ा भी कोई कीड़ा होगा, जिसकी तस्वीर आपने खींची है। और अगर मान लें कि ऐसा कोई कीड़ा होता भी है तो भला ये बच्चे उसे क्या जानें।"

"यह ठीक है कि इन बच्चों ने इस कीड़े को कभी नहीं देखा। लेकिन इसके बारे में पढ़ा तो ज़रूर है, और उससे एकदम मिलते-जुलते कीड़े तो उन्होंने न सिर्फ़ देखे हैं, बल्कि पकड़े भी हैं। तुम खुद उन कीड़ों को अच्छी तरह जानती हो, मगर इस वक़्त किसी वजह से वह तुम्हारे दिमाग़ से निकल गया है। ज़रा-सा अता-पता मिलेगा तो फ़ौरन समझ में आ जाएगा।" शारिक़ के अब्बू ने कहा।

यह सुनकर सब छोटे-बड़ों ने अपने-अपने दिमाग़ों पर ज़ोर डालना शुरू कर दिया। शिफ़ा, ऐमन और अमीन यह सोचकर हैरान थे कि कैसी अजीब बात है कि दादा अब्बू कहते हैं कि इस कीड़े से मिलते-जुलते कीड़ों को हमने देखा ही नहीं है, बल्कि पकड़ा भी है। फिर भला वह हमें याद क्यों नहीं आता।

यही सोचते-सोचते शिफ़ा का दिमाग़ उन तितलियों की तरफ़ गया, जिन्हें उसने कई बार पकड़ा भी था। उसने दादा अब्बू से कहा—

"दादा अब्बू! क्या आपकी इस अनोखी पहेली का जवाब तितली तो नहीं। देखिए, पहेली के कीड़े की ज़्यादातर ख़ूबियाँ जैसे मूँछें, आँखें, पंख और टाँगें तितली में नज़र आती हैं। और हाँ, जैसा कि आप कह रहे थे, तितली को तो हमने देखा ही नहीं, बल्कि पकड़ा भी है।"

दादा अब्बू के कुछ कहने से पहले ही हारिस ने अपनी राय दी—

"और जनाब यही बात हीरे की कनियों जैसी आँखोंवाली मक्खी के बारे में भी कही जा सकती है।" तभी ख़ालिद ने भी कहा—

"अगर मैं कहूँ कि वह तो हेलिकॉप्टर की तरह उड़नेवाली भम्भीरी है, तब क्या आप एतिराज़ करेंगे, क्योंकि ये ख़ूबियाँ तो उसमें भी मौजूद हैं, बल्कि ज़्यादा अच्छी तरह नज़र आती हैं।"

ऐमन के दादा अब्बू ने सबके जवाब सुनने के बाद कहा—

"तुम सब लोगों के जवाब ग़लत हैं। असल बात यह है कि पहेली एक ख़ास कीड़े के बारे में है। इसलिए पहेली में जहाँ इसकी ख़ास ख़ूबियाँ छिपी हुई हैं वहीं वह ख़ूबियाँ भी हैं, जो सभी कीड़ों में पाई जाती हैं। तुम लोगों ने चूँकि पहेली का हल अलग-अलग कीड़े बताए हैं, इन सभी में कीड़ों की आम ख़ूबियाँ पाई जाती हैं। मगर अभी तक किसी ने भी उस ख़ास कीड़े का नाम नहीं बताया है जिसमें सारी ख़ूबियाँ मौजूद हों।"

"अच्छा चलिए, हम और सोचते हैं, मगर आप हमें उस कीड़े का कुछ और अता-पता बताइए।" रअना ने कहा।

शारिक़ के अब्बू ने बताना शुरू किया—

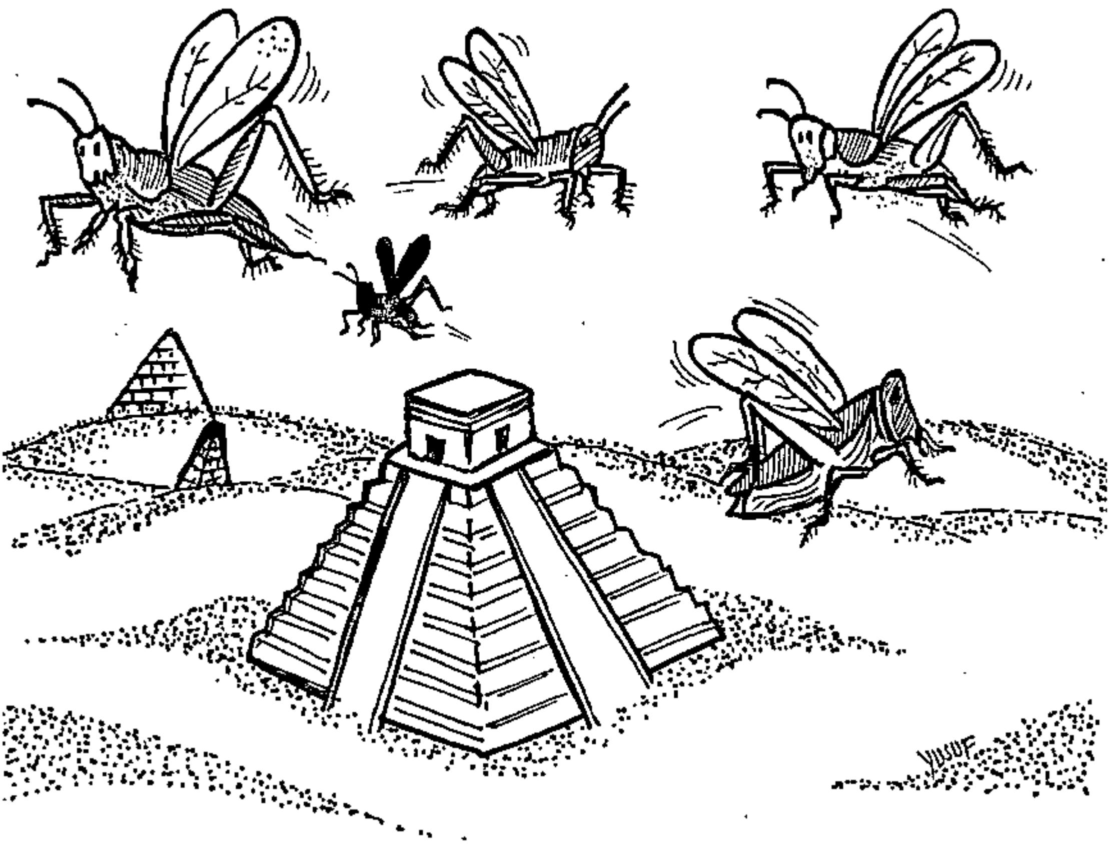
"देखो भई, ये कीड़े बहुत पेटू होते हैं। हरी चीज़ें उन्हें बहुत पसन्द हैं। जब तक हरी चीज़ें मिलती रहें, यह उनपर हाथ साफ़ करते हैं, लेकिन अगर कभी उन्हें कुछ दिन खाना न मिले तो वे अपने बच्चों तक को खाने से नहीं चूकते। ये रेतीली जगहों पर पैदा होते हैं, लेकिन बाद में कहीं भी जा सकते हैं, शर्त यह कि उन्हें वहाँ खाना मिलने की उम्मीद हो।"

बच्चे तो बच्चे, बड़े भी यह अता-पता सुनकर हैरान थे। लगता था अब तो पहेली कुछ और मुश्किल हो गई है। यह सुनकर बच्चों में से किसी ने हार मानने की बात की तो शारिक़ के अब्बू बोले—

"जल्दी न करो, माशा-अल्लाह तुम सब तो बहुत ज़हीन हो, दिमाग़ पर थोड़ा और ज़ोर डालोगे तो पहेली का हल ज़रूर तुम्हारी समझ में आ जाएगा। असल बात यह है कि ये कीड़े दो हालतों में पाए जाते हैं। एक हालत में उनकी पैदाइश और खाना इस तरह होता है जैसा कि मैंने अभी बताया है। वह हालत तुममें से किसी ने नहीं देखी, इसलिए तुम सब परेशान हो गए। लेकिन दूसरी हालत तुम्हारी देखी-भाली है। इस हालत में उनका रंग आम तौर से हरा होता है। वे हरी घास के बीच ही रहते

हैं और उन्हीं को खाते हैं, ये कीड़े हमेशा अपनी पिछली मोटी और मज़बूत टाँगों की मदद से लम्बी-लम्बी छलाँगें लगाते हैं।"

इतनी बातें सुनने के बाद बड़ों के लिए तो पहेली का समझना मुश्किल था ही नहीं, लेकिन वह बच्चों के लिए भी बहुत साफ़ हो गई थी। इसलिए ऐमन ने जल्दी से कहा—



"दादा अब्बू! आपने भी बस कमाल कर दिया। इतना आम कीड़ा और उसकी इतनी बड़ी दास्तान। बताइए क्या आप की पहेली का हल टिड्डा नहीं है?"

मगर दादा अब्बू तो अब भी ख़ामोश थे और सिर्फ़ मुस्कुराए जा रहे थे। यह देखकर ऐमन की दादी ज़ोर से चिल्लाईं—

"अब हाँ क्यों नहीं कह देते। क्या अब भी आप इनकार ही किए जाएँगे।"

इतने दबाव के बाद दादा अब्बू बहुत हल्की आवाज़ से बोले–

"टिड्डा नहीं टिड्डी।" यह सुनकर शारिक़ भी चुप न रह सके और बोले–

"अब्बू, यह तो आपकी बहुत ज़्यादती है, बताइए क्या कहीं भी आपकी पहेली से यह पता लगता है कि पहेली का कीड़ा नर होना चाहिए या मादा?"

"मैंने कब कहा कि पहेली में ऐसा कुछ है, मगर बात यह है कि टिड्डा और टिड्डी हैं ही कीड़ों की दो अलग-अलग क़िस्में।"

यह सुनते ही हैरत में डूबी कई आवाज़ें एक साथ निकलीं–

"क्या सच में! यह तो बहुत अजीब बात है।" इसके बाद हारिस ने कहा–

"यह बात तो न सिर्फ़ अजीब है, बल्कि दिलचस्प भी। क्यों न अब हम कीड़ों ही के बारे में अपने अब्बू से कुछ बातें कर लें।"

"हाँ-हाँ, यह ठीक रहेगा" सबने जल्दी से हाँ कह दिया। इससे पहले कि अब्बू टिड्डे और टिड्डी का क़िस्सा सुनाएँ ख़ालिद बोल पड़े–

"टिड्डे-टिड्डियों की बातें ज़रूर ही दिलचस्प होनेवाली हैं, मगर क्या ही अच्छा हो कि उससे पहले हम अब्बू से यह जानने की कोशिश करें कि कीड़ों को दूसरे जानवरों से अलग पहचानने का आख़िर क्या तरीक़ा है।"

यह सुनकर शारिक़ भी बोले–

"अब्बू! ख़ालिद ठीक कह रहे हैं। यह सवाल ख़ुद मेरे दिमाग़ में भी आ रहा था, क्योंकि अकसर लोग मकड़ी, बीरबहूटी, बिच्छू और कनखजूरे जैसे जानदारों को भी कीड़ा कह देते हैं जो ठीक नहीं लगता, लेकिन मैं इसे साबित नहीं कर पाता। इसी तरह इनसानों के पेट में जो कद्दू-दाने हो जाते हैं, वह भी पेट के कीड़े ही कहलाते हैं और यही लफ़्ज़ बैक्टेरिया और वायरस के लिए भी इस्तेमाल होता है।"

ख़ालिद और शारिक़ की बातें सुनने के बाद उनके अब्बू बोले–

"मुझे बहुत ख़ुशी है कि तुम लोग एक बहुत ही ज़रूरी बात जानना चाहते हो। यह सचमुच इतनी अहम बात है कि बच्चे तो बच्चे, कभी-कभी तो यह फ़र्क बड़े भी नहीं बता पाते। असूल में कीड़े का लफ़्ज़ उन जानदारों के लिए बोला जाता है जिन्हें अंग्रेज़ी में इंसेक्ट्स (Insects) कहते हैं। इनका बदन तीन हिस्सों सिर, सीना और पेट में बँटा होता है। सिर पर दो संयुक्त आँखें (Compound Eyes) और दो मूँछें होती हैं जिन्हें ऐनटिनी (Antennae) कहते हैं। सीने में ऊपर की तरफ़ एक या दो जोड़ी पंख और नीचे की तरफ़ तीन जोड़ी जोड़दार पैर होते हैं। पेट भी कई टुकड़ों में बँटा होता है जिसपर पैर नहीं होते। ये अंडे देते हैं जिनमें से या तो माँ-बाप की शक्ल के छोटे-छोटे कीड़े निकलते हैं जो वक़्त के साथ बड़े हो जाते हैं। या फिर माँ-बाप की शक्ल से बिलकुल अलग लारवे निकलते हैं, जो प्योपे बनते हैं और फिर इससे माँ-बाप की शक्ल के कीड़े निकलते हैं। तुम्हें जिन जानदारों में ये ख़ूबियाँ दिखाई दें तो समझ लो कि वे कीड़े हैं।" शारिक़ के अब्बू ने समझाया।



"इसका मतलब यह हुआ कि मकड़ी, बीरबहूटी, बिच्छू और कनखजूरों को कीड़ा नहीं कहना चाहिए।" शारिक़ ने कहा।

"बिलकुल ठीक। अगर ग़ौर से देखो तो मकड़ी, बीरबहूटी, बिच्छू और कनखजूरे के बदन के सिर्फ़ दो ही हिस्से सिर और धड़ होते हैं और पैर भी तीन जोड़े के बजाय चार जोड़े होते हैं। वर्गीकरण करते वक़्त इन्हें कीड़ों से अलग गरोह में रखा जाता है। इसी तरह कनखजूरे का बदन तो बहुत-से टुकड़ों से मिलकर बनता है और हर टुकड़े में एक या कई जोड़ी पैर होते हैं, पेट के कद्दू-दाने तो बिलकुल ही अलग गरोह के जानदार हैं और बैक्टेरिया और वायरस तो एक सेलवाले या फिर बिना सेलवाले होते हैं, जिन्हें वैज्ञानिक जानदारों में रखने को तैयार ही नहीं हैं। उन्होंने उनके लिए एक अलग गरोह बनाया है। उन्हें जरासीम (कीटाणु) कहकर पुकारना ज़्यादा ठीक है।"

"शुक्रिया अब्बू! आपने तो कीड़ों की इतनी साफ़ ख़ूबियाँ बता दी हैं कि अब इंशाअल्लाह हम कभी उन्हें पहचानने में ग़लती नहीं करेंगे।" ख़ालिद ने कहा।

ऐमन जो बहुत ध्यान से कीड़ों की ख़ूबियाँ सुन रही थी बोली–

"दादा अब्बू! आपने कीड़ों की ख़ूबियाँ बताते हुए उनकी संयुक्त आँखों (Compound Eyes) और मूँछों के बारे में बताया था। ये भला कैसी होती हैं?"

"ऐमन बेटी! तुमने बहुत अच्छा सवाल पूछा है। इनके बारे में तो मुझे ख़ुद ही बताना चाहिए था। कीड़ों की आँखें संयुक्त इसलिए कहलाती हैं कि उनकी हर आँख में अनगिनत लेंसेज़ होते हैं और हर लेंस एक आँख की तरह काम करता है। हमारी तो हर आँख में बस एक ही लेंस होता है। भम्भीरियों और कुछ दूसरी मक्खियों की आँखों में तो इनकी तादाद पचास हज़ार तक होती है। मूँछों का शब्द हमने कीड़ों के इन्द्रीय सम्बन्धी (हिस्सी) अंगों के लिए इस्तेमाल किया था। ये अंग सर के ऊपरी हिस्से में किसी एरियल की तरह नज़र आते हैं कीड़े इनके द्वारा अपने चारों तरफ़ की चीज़ों को महसूस करते हैं। अंग्रेज़ी में इन्हें एनटिनी (Antennae) कहते हैं, जो बहुवचन है। दो या ज़्यादा के लिए एनटिनी (Antennae) जबकि एक के लिए ऐनटिना (Antenna) का लफ़्ज़ बोला जाता है।"

कीड़ों की संयुक्त आँखों के बारे में जानने के बाद शिफ़ा ने सवाल किया–

"कीड़ों को उनकी संयुक्त आँखों से तो बहुत दूर की चीज़ें भी बहुत साफ़ नज़र आती होंगी।"

"बदक़िस्मती से ऐसा नहीं है। इन बेचारों को तो बस पास ही क़ी चीज़ें नज़र आती हैं, और वह भी टुकड़ों में। जब कोई चीज़ कीड़ों के बहुत पास होती है तो हर लेंस में उस चीज़ के उसी हिस्से का अक्स बनता है, जो उसके बिलकुल सामने हो। कीड़े सारे अक्सों को मिलाकर ही उस चीज़ को देख पाते हैं। इस तरह कीड़ों की आँखें बहुत अनोखी और निराली हैं, देखने में बड़ी और हीरों जैसी चमकदार लेकिन काम में कमज़ोर।"

"अच्छा चलें अब टिड्डे और टिड्डियों का क़िस्सा हो जाए, उम्मीद है वह भी कुछ कम मज़ेदार न होगा।" इरम ने पूछा जिसके बाद अमीन के दादा अब्बू ने कहना शुरू किया–

"सचमुच यह क़िस्सा बहुत दिलचस्प है और साथ ही महत्वपूर्ण भी। देखा जाए तो टिड्डे और टिड्डियाँ एक ही बड़े गरोह के कीड़े हैं, जो अपनी छोटी मूँछों से पहचाने जाते हैं और वैज्ञानिक इसे Grass hopper वाले ग्रुप में रखते हैं। आम तौर से लोग इन दोनों को टिड्डे ही कहते हैं, मगर इन दोनों के रहन-सहन में फ़र्क़ होता है। वे जिन्हें हम टिड्डे कहते हैं आमतौर पर हरे रंग के होते हैं और घास या हरे पत्तों के बीच ही अलग-अलग रहते हैं। यानी इनमें दल या झुंड बनाने की आदत नहीं होती जो ज़िन्दगी भर कभी नहीं बदलती। इनसानों को इनसे कोई ख़ास नुक़सान नहीं होता।"

"मगर इसके विपरीत टिड्डियाँ आमतौर पर भूरी या काले-पीले रंगों की होती हैं। उनके परों (पंखों) पर भी काले धब्बे नज़र आते हैं और सबसे बड़ी बात कि यह एक दल या जत्था बनाकर एक जगह से दूसरी जगह जाती रहती हैं। जहाँ पहुँचती हैं वहाँ की हर हरी चीज़ का सफ़ाया कर देती हैं और इनसानों को बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुँचाती हैं।"

अमीन के दादा अब्बू ने अपनी बात जारी रखते हुए आगे बताया–

"टिड्डियों के माहिर उनके लिए अंग्रेज़ी का लफ़्ज़ लोकस्ट (Locust) इस्तेमाल करते हैं जिसके मानी हैं 'प्लेग'। इसका मतलब यह है कि ये वे कीड़े हैं जो किसी महामारी (वबा) की तरह एक इलाक़े को अपनी लपेट में ले लेते हैं और वहाँ बहुत ज़्यादा तबाही और बरबादी मचाते हैं। सारी दुनिया में इन टिड्डियों की ग्यारह क़िस्में पाई जाती हैं, जिनमें से तीन भारत, पाकिस्तान और आस-पास के देशों में पाई जाती हैं। इन्हें आम ज़बान में डेज़र्ट लोकस्ट, माइग्रेटरी लोक्स्ट और बोम्बे लोकस्ट के नामों से जाना जाता है। भारत-पाक के इलाक़े में सबसे ज़्यादा तबाही डेज़र्ट लोकस्ट से होती है।"

इतना बताने के बाद दादा अब्बू ने ज़रा मुस्कुराते हुए कहा–

"इसके अलावा टिड्डे-टिड्डियों में एक ख़ास फ़र्क़ यह है कि टिड्डे तो हमेशा टिड्डे ही रहते हैं, मगर टिड्डियाँ समय-समय से अपने-आपको बदलकर टिड्डे भी बन जाती हैं।"

"अब्बू! आपकी बातें भी पहेलियों से कम नहीं होतीं। अभी तक तो हम इस लायक़ भी नहीं हुए कि टिड्डों को टिड्डियों से अलग पहचान सकें कि आपने बिलकुल ही अनूठी बात बता दी कि टिड्डियाँ टिड्डे भी बन जाती हैं।" ख़ालिद ने हैरत ज़ाहिर करते हुए कहा।

ख़ालिद के अब्बू ने सबको तसल्ली देते हुए बताया–

"भई तुम लोग इतने बेसब्रे क्यों हो रहे हो, थोड़ा रुको अभी सब बातें तुम्हारी समझ में आ जाएँगी। मैंने तुम्हें बताया था कि टिड्डियाँ कुछ-कुछ दिन बाद ही दल बनाती हैं मगर बाक़ी दिनों में वे टिड्डे ही की तरह अलग-अलग रहती हैं। इस वक़्त उन्हें सचमुच टिड्डियों से अलग पहचानना मुश्किल होता है। मगर जैसे ही उनमें दल बनाने का रुझान पैदा होता है। उन्हें आसानी से टिड्डों से अलग पहचाना जा सकता है।

"अब्बू, वही तो हम लोग आपसे पूछ रहे हैं।" कई आवाज़ें एक साथ उभरीं।

ख़ालिद के अब्बू ने बात जारी रखते हुए आगे कहा–

"सब्र करो! मैं अभी सब कुछ बताता हूँ। टिड्डियों के माहिर कहते हैं कि टिड्डे-टिड्डियों का यह बदलाव एक से बारह साल बाद हो सकता है। इसकी वजह मौसम है। अगर मौसम अच्छा हो, ख़ूब बारिशें हों और बहुत ज़्यादा हरियाली हो तो टिड्डों की तरह दिखाई देनेवाली टिड्डियाँ अपनी तादाद बढ़ाना शुरू कर देती हैं। लेकिन इसके विपरीत मौसम ख़राब हो, बारिशें कम हों और हरियाली दिखाई न दे तो उनकी पैदावार बहुत कम होती है और वह टिड्डों ही की तरह अलग-अलग रहती हैं। माहिर लोग उनकी आँखें देखकर उन्हें पहचानते हैं। टिड्डों की आँखों में कोई ख़ास बात नज़र नहीं आती लेकिन टिड्डियों की आँखों में धारियाँ दिखाई देती हैं। अगर टिड्डी की आँख में तीन धारियाँ दिखाई दें तो समझना चाहिए कि अभी दल नहीं बनेगा, लेकिन अगर इन धारियों की तादाद तीन से बढ़कर पाँच हो जाए तो समझना चाहिए कि अब दल बननेवाला है। दल बनने के बाद आँख की धारियों की यह तादाद बढ़कर सात हो जाती है। मुझे उम्मीद है कि अब तुम्हें टिड्डे-टिड्डियों को पहचानने में कोई मुश्किल न होगी।"

अमीन की दादी बहुत देर से टिड्डियों की बातें ध्यान से सुन रही थीं, वह कहने लगीं–

"अरे हाँ, क्या बात हो गई कि अब टिड्डी दल आना ही बन्द हो गए। पहले तो वह बहुत जल्दी-जल्दी आया करते थे। कभी-कभी तो हम उन्हें हर साल ही देखते थे। जब भी दल आता है तो सारा आसमान टिड्डियों से ढक जाता, सूरज की रौशनी तक माँद हो जाती थी। देखा जाए तो यह टिड्डी दल एक तरह का आसमानी अज़ाब होता था। शारिक़ के अब्बू से पूछो, तुम्हें बताएँगे कि इनके हमलों से ज़बरदस्त तबाही मचती है, कई जगहों पर तो अकाल पड़ जाता था और लोग भूखों मरने लगते थे।"

यह सुनते ही सब छोटे-बड़ों ने हैरत से उनकी तरफ़ देखा। शिफ़ा, ऐमन और अमीन की हैरत तो देखने के क़ाबिल थी। वे सोच रहे थे कि आख़िर यह टिड्डी दल क्या बला थी जिसे उनकी दादी अम्माँ ने तो देखा है, मगर हम उसके बारे में कुछ जानते तक नहीं। ख़ालिद ने इस बारे में अपने अब्बू से जानना चाहा—

"अब्बू! क्या सचमुच टिड्डी दल के बारे में जो कुछ अम्मी कह रही हैं वह ठीक है? क्या ये टिड्डियाँ ऐसी ही तबाही मचानेवाली हुआ करती थीं?"

"हाँ बेटे, तुम्हारी अम्मी ठीक कह रही हैं। टिड्डी दल ऐसे ही ख़तरनाक हुआ करते थे जैसा कि तुम्हारी अम्मी ने कहा। उन्हें आसमानी अज़ाब ही कहा जा सकता था। इनके एक अज़ाब का वाक़िआ तो क़ुरआन में भी बयान हुआ है।"

"क्या सच, दादा अब्बू" ऐमन, शिफ़ा और अमीन ने हैरत से कहा।

"इस अज़ाब का ज़िक्र सूरा-7 आराफ़ में है। तुम जानते हो कि फ़िरऔन अपने ज़माने का बहुत ज़ालिम और घमंडी बादशाह था, जो अपने आपको लोगों का रब कहा करता था। अल्लाह तआला ने उसका घमंड ख़त्म करने के लिए हज़रत मूसा (अलैहि॰) को उसके पास भेजा था। फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लोगों को डराने के लिए अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहि॰) को दो मोजज़े दिए थे। एक लाठी जो साँप बन जाती थी और दूसरा उनका हाथ जो बग़ल में दबाने से चमकने लगता था। इनके अलावा अल्लाह ने फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर कई अज़ाब भी भेजे, ताकि वह डरकर अपना घमंड ख़त्म कर दे और अल्लाह के बताए हुए सीधे रास्ते पर चलने लगे। क़ुरआन में इन अज़ाबों का ज़िक्र सूरा-7 आराफ़ की आयत-133* में बयान हुआ है।

इन अज़ाबों में से एक अज़ाब टिड्डियों का अज़ाब भी था। उन दिनों टिड्डियों

---

*"आख़िरकार हमने तूफ़ान भेजा, टिड्डी दल छोड़े, सुरसुरियाँ फैलाईं, मेंढक निकाले और ख़ून बरसाया! ये सब निशानियाँ अलग-अलग करके दिखाईं। मगर वह सरकशी किए चले गए और वह बड़े ही मुजरिम लोग थे।" (क़ुरआन, सूरा-7 आराफ़, आयत-133)

की रोकथाम के तरीक़े लोगों को मालूम न थे। सोचो, जब करोड़ों टिड्डियाँ फ़िरऔनियों पर हमलावर हुई होंगी तो उनपर क्या कुछ तबाही और बरबादी न आई होगी। मगर वे लोग इतने ज़्यादा नाफ़रमान और सख़्त हो चुके थे कि फिर भी सीधे रास्ते पर न आ सके और आख़िरकार अल्लाह तआला ने फ़िरऔन और उसकी फ़ौज को समुद्र में डुबा दिया। टिड्डी दल के ज़रिया उनपर जो तबाही आई होगी उसका रिकार्ड मिलना तो मुमकिन नहीं है, लेकिन कुछ दूसरे हमलों का रिकार्ड तारीख़ में मिलता है। जिनसे इस अज़ाब से होनेवाली तबाही का अन्दाज़ा किया जा सकता है।"

"क्या सचमुच कुछ ऐसे रिकार्ड्स मिलते हैं?" इरम ने जानना चाहा।

"इतिहास में ऐसे टिड्डी दलों का ज़िक्र मौजूद है, जिन्हें पढ़कर अल्लाह के अज़ाब से डर लगने लगता है। कहते हैं बहुत साल पहले अफ़्रीक़ा में एक टिड्डी दल आया था जो दो हज़ार वर्ग मील में फैला हुआ था और उसे किसी एक जगह से गुज़रने में पूरे दस दिन लगते थे। इस दल में कितनी टिड्डियाँ होंगी और उन्होंने कितनी तबाही मचाई होगी इसका अन्दाज़ा तुम अच्छी तरह कर सकते हो। इसी तरह 1789 ई॰ में दक्षिण अफ़्रीक़ा में एक टिड्डी दल का पता मिलता है। यह दल किसी वजह से समुद्र पार न कर सका और उसी में गिरकर ख़त्म हो गया। मरी हुई टिड्डियाँ बह-बहकर किनारे पर आने लगीं और उन्होंने किनारे पर तीन फुट ऊँची और पचास मील लम्बी एक दीवार बना दी। टिड्डियों के सड़ने से जो बदबू उठ रही थी वह लगभग एक सौ पचास मील दूर तक महसूस की जा सकती थी। सोचो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता और वह दल यूँ ही मरकर ख़त्म न हो गया होता तो कितनी बरबादी होती! शायद उसके बारे में हमारे लिए सोचना भी मुश्किल है।

"अब्बू, क्या हमारे मुल्क में भी कभी ऐसा कोई टिड्डी दल आया है?"

शारिक़ ने सवाल किया।

"1952 की बात है। राजस्थान में एक बहुत बड़ा टिड्डी दल आया था। उस

वक़्त भी उन्हें क़ाबू करने के लिए कोई अच्छे तरीक़े नहीं थे। लोग शोर मचाते और ढोल पीटते थे ताकि दल उनके इलाक़े में न ठहर जाए, क्योंकि वे जानते थे कि अगर दल वहाँ बैठ गया तो फिर वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

जोधपुर के पास ओसियाँ गाँव में एक औरत अपने खेतों से टिड्डियाँ उड़ाने गई। उसने अपने नौ महीने के बच्चे को एक टोकरी में लिटाकर खेत के किनारे छोड़ दिया और टिड्डियाँ भगाने लगी। थोड़ी देर बाद जब वह वापस आई तो बच्चा ग़ायब था और उसके ढाँचे से सैंकड़ों टिड्डियाँ चिमटी हुई थीं।"

यह बात सुनकर तो बच्चों को झुरझुरी आ गई। वे सोच भी नहीं सकते थे कि ये छोटे-छोटे कीड़े इतने ख़ौफ़नाक भी हो सकते हैं।

"इस क़दर दुखदायी होती हैं ये टिड्डियाँ!" शगुफ़्ता ने कहा।

"सोचो 1952 में जब वह इतना ग़ज़ब ढा सकते हैं तो उन्होंने फ़िरऔनियों के साथ क्या कुछ नहीं किया होगा।" ऐमन के दादा अब्बू ने बताया।

"दादा अब्बू! यह टिड्डी दल अब आना क्यों बन्द हो गए हैं?" शिफ़ा ने जानना चाहा।

"आते तो अब भी हैं, मगर क्योंकि अब उनकी रोक-थाम ठीक से होने लगी है इसलिए बड़े दल बन ही नहीं पाते और इसी लिए अब बरबादी भी वैसी नहीं होती। दिल्ली में आख़िरी टिड्डी दल को 1962 में देखा गया था। उस वक़्त शिफ़ा, ऐमन और अमीन तो थे ही नहीं, इनके माँ-बाप भी पैदा नहीं हुए थे।" शिफ़ा के दादा अब्बू ने बताया।

"मगर अब्बू! इतने बड़े दल को क़ाबू में करना क्या कोई आसान काम होगा?" हारिस ने सवाल किया।

"तुम्हारा ख़याल ठीक है। असल बात यह है कि वैज्ञानिकों ने टिड्डियों के पैदा होने की जगहों की तलाश कर ली है। ये जगहें रेगिस्तानी हैं जो अफ़्रीक़ा के रेगिस्तान से शुरू होकर अरब, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान और भारत के

राजस्थान में जैसलमेर, बाड़मेड़ और बीकानेर तक फैली हुई हैं। शुरू में टिड्डी के बच्चों के पर नहीं होते। इसलिए वह उड़ नहीं सकते और ज़मीन पर फुदक-फुदककर चलते हैं। उस वक़्त उन्हें मारना आसान होता है, लेकिन पर (पंख) निकल आने के बाद जब वह दल बनाकर एक जगह से दूसरी जगह उड़कर जाने लगते हैं तब उन्हें क़ाबू में करना बहुत मुश्किल हो जाता है। उस वक़्त हेलिकॉपटरों की मदद से उनपर दवा छिड़कनी पड़ती है, जिस पर ख़र्च बहुत ज़्यादा आता है।" हारिस के अब्बू ने बहुत अच्छी तरह समझाया।

यह सुनकर हारिस ने अगला सवाल किया–

"अब्बू! रेगिस्तान में इन टिड्डियों को ढूँढना और मारना भी क्या आसान होगा, वहाँ तो भटके हुए मुसाफ़िरों के लिए अपना रास्ता ढूँढना तक मुश्किल होता है।"

"असूल में ये टिड्डियाँ रेगिस्तान में अंडे देने के लिए ऐसी जगह तलाश करती हैं जहाँ की ज़मीन में नमी हो और वहाँ थोड़ी-सी हरियाली भी हो। अंडे देने का काम आम तौर पर बरसात के बाद शुरू होता है। मादा टिड्डी अपने पेट को पोली और गीली ज़मीन में छह-छह सेंटीमीटर नीचे तक घुसा देती है और वहाँ सौ अंडों का एक गुच्छा देती है और फिर उस जगह को एक झाग जैसी गीली चीज़ से बन्द कर देती है, जो वह खुद पैदा करती है। झाग जैसी चीज़ सूखकर स्पंज की तरह सख़्त हो जाती है। यह अंडों की हिफ़ाज़त का तरीक़ा है। टिड्डी अपनी चार महीने की ज़िन्दगी में तीन बार अंडे देती है। अंडों से निकलनेवाले बिना पंख के बच्चे स्पंज काटकर बाहर निकलते हैं। उन बच्चों की तादाद करोड़ों में होती है जो एक लशकर की तरह एक साथ हरियाली की तलाश में फुदकते हुए चलते हैं। अल्लाह तआला ने सूरा-54 क़मर, आयत-7* में उनकी मिसाल देते हुए फ़रमाया है "क़ियामत के दिन लोग सहमी हुई निगाहों के साथ अपनी क़ब्रों से ऐसे निकलेंगे जैस वह बिखरी हुई टिड्डियाँ हों।"

* लोग डरी हुई निगाहों के साथ अपनी क़ब्रों से इस तरह निकलेंगे गोया वे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं। (क़ुरआन, सूरा-54 क़मर, आयत-7)

हारिस के अब्बू ने टिड्डियों के बच्चों के बारे में बताते हुए आगे कहा–

"इन टिड्डियों के बच्चे पीले रंग के होते हैं। करोड़ों की तादाद में यह फुदकते हुए टिड्डी के बच्चे ऐसे दिखाई देते हैं जैसे रेगिस्तान में बड़े-बड़े पीले धब्बे चल रहे हों। उन्हें मारने का तरीक़ा यह है कि उनके रास्तों में लम्बी-लम्बी खाइयाँ खोद दी जाती हैं। वे फुदकते हुए आते हैं और उनमें गिर जाते हैं। ऊपर से दवा छिड़ककर खाइयों में मिट्टी भर दी जाती है और इस तरह इनसे छुटकारा मिल जाता है।"

"दादा अब्बू। क्या यह भी पता लगाया जा सकता है कि एक टिड्डी दल में आम तौर पर कुल कितनी टिड्डियाँ होती होंगी?" शिफ़ा ने पूछा।

"हाँ-हाँ! क्यों नहीं। माहिरों का कहना है कि एक वर्ग किलोमीटर बड़े टिड्डी दल में लगभग एक करोड़ टिड्डियाँ होती हैं। जिन दलों के बारे में अभी मैं ने बताया था, उनमें कितनी टिड्डियाँ होंगी इसका हिसाब तुम खुद लगा लो।" दादा अब्बू ने कहा।

अगला सवाल ऐमन का था, उसने पूछा–

"क्या यह भी पता चला है कि हर दिन यह टिड्डियाँ कितना खाना खा लेती होंगी?"

"इसका हिसाब भी लगाया गया है। माहिर लोग कहते हैं कि एक टिड्डी दिन भर में तीन ग्राम हरी पत्तियाँ खा लेती है।"

बस इतना कम! ऐमन ने बहुत हैरान होकर कहा। "दादा अब्बू! इतना कम खाने से भला अकाल कैसे पड़ जाते होंगे?"

"तुम ऐसा इसलिए सोच रही हो कि मैंने तुम्हें सिर्फ़ एक टिड्डी की एक दिन की खुराक बताई है। तुम ज़रा एक वर्ग किलोमीटर में फैले बड़े दल की एक करोड़ टिड्डियों का हिसाब लगाकर देखो, तुम्हारे होश उड़ जाएँगे।"

यह सुनकर शिफ़ा ने हिसाब लगाना शुरू किया–

"एक टिड्डी खाती है तीन ग्राम हरी पत्तियाँ तो एक करोड़ टिड्डियाँ खाएँगी तीन करोड़ ग्राम पत्तियाँ। यानी 30,000 किलोग्राम या तीन सौ क्विंटल पत्तियाँ।"

"अरे बापरे" कहकर उसने कानों पर हाथ रख लिए। तब दादा अब्बू ने कहा–

"यह हिसाब तो बस एक वर्ग किलोमीटर में मौजूद एक करोड़ टिड्डियों के एक दिन के खाने का है। अगर हम समझ लें कि यह दल सिर्फ़ इतना ही बड़ा था, जबकि आम तौर पर टिड्डी दल इससे बहुत बड़े हुआ करते थे, और वह किसी जगह सिर्फ़ कुछ ही दिन रुका रह गया तो सोचो उसने कितना खाया होगा और कितनी बड़ी तबाही मचाई होगी। अगर यह टिड्डी दल उतने बड़े हों जितने मैंने थोड़ी देर पहले बताए थे तो फिर तबाही के बारे में तुम खुद हिसाब लगा सकते हो। फ़िरऔनियों को सीधे रास्ते पर लाने के लिए अल्लाह ने ऐसा ही कोई टिड्डी दल भेजा होगा।"

अमीन बहुत देर से टिड्डियों की तबाही और बरबादी की बातें सुन रहा था, उसने उनके बारे में अपनी सलाह दी–

"दादा अब्बू। लोगों को चाहिए कि जब कभी टिड्डी दल आए तो वह टिड्डियों को पकड़-पकड़कर खा जाएँ।"

"अरे-अरे! कैसी बातें करते हो। यह कहते हुए तुम्हें घिन नहीं आती?" ऐमन ने कहा।

ऐमन और अमीन की बातें सुनकर दादा अब्बू ने कहा–

"अमीन का कहना कुछ ग़लत भी नहीं है। हम इसे ज़रूर घिन खानेवाली बात कह रहे हैं। मगर हक़ीक़त में दुनिया के कई मुल्कों जैसे अमेरिका, जापान और अरब के लोग तो सचमुच इन टिड्डियों को बहुत शौक़ से खाते हैं। इन मुल्कों में टिड्डियाँ भी झींगों, मछली और हिरन की तरह बहुत महँगी मिलती हैं।"

"क्या सचमुच!" कई आवाज़ें एक साथ उभरीं।

कैंप फ़ायर का प्रोग्राम बहुत देर से चल रहा था और वह कामयाब भी रहा, जिससे सब लोगों ने ख़ूब मज़ा भी उठाया। ऐमन के दादा अब्बू ने उठते हुए कहा–

अच्छा भई, अब बहुत रात हो गई है, अब तुम लोग भी अपने-अपने कमरों में जाकर सो जाओ। फिर कभी मौक़ा मिला तो इंशा-अल्लाह कीड़ों की और बहुत-सी दिलचस्प बातें तुम्हें बताएँगे।